ब्रेकर में ख़तरा

लेखनः कैथरीन ए. वैल्च, चित्रः एन्ड्रिया शाइन

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा



ब्रेकर में ख़तरा

लेखनः कैथरीन ए. वैल्च
चित्रः एन्ड्रिया शाइन
भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

लेखिका की कलम से

दक्षिणपूर्वी पैन्सिलवेनिया में, 1800 के शतक के दौरान कोयले की खदानों वाले कस्बों मे जीवन आसान नहीं था। ये खानें अंधेरी, चूहों से भरी, गन्दी और अक्सर गीली और बेहद ख़तरनाक हुआ करती थीं। इन खानों में काम करने वाले पुरुष मज़दूर 10 से 11 घंटों तक झुक कर कोयला खोदते थे, और हर सांस के साथ ज़हरीलरी गैसों और कोयले का बुरादा फेंफड़ों के अन्दर लेते थे। उनमें से कई दुर्घटनाओं में मारे भी जाते थे। ये दुर्घटनाएं आग लगने, सुरंगों के धंसने और विस्फोट की हो सकती थीं।

कई खान कस्बे कोयला कम्पनियों द्वारा संचालित थे। ये कम्पनियां मज़दूरों को घटिया दर्जे के आवास उपलब्ध करवाती थीं, और अक्सर उनको पूरा मेहनताना तक नहीं चुकाती थीं। खान मज़दूरों के परिवार कम्पनियों की दुकानों से सौदा खरीदने और ऊँची कीमतें चुकाने पर मजबूर थे। नतीजन कुछ स्त्रियों को अतिरिक्त कमाई के लिए कारखानों में काम करना पड़ता था।

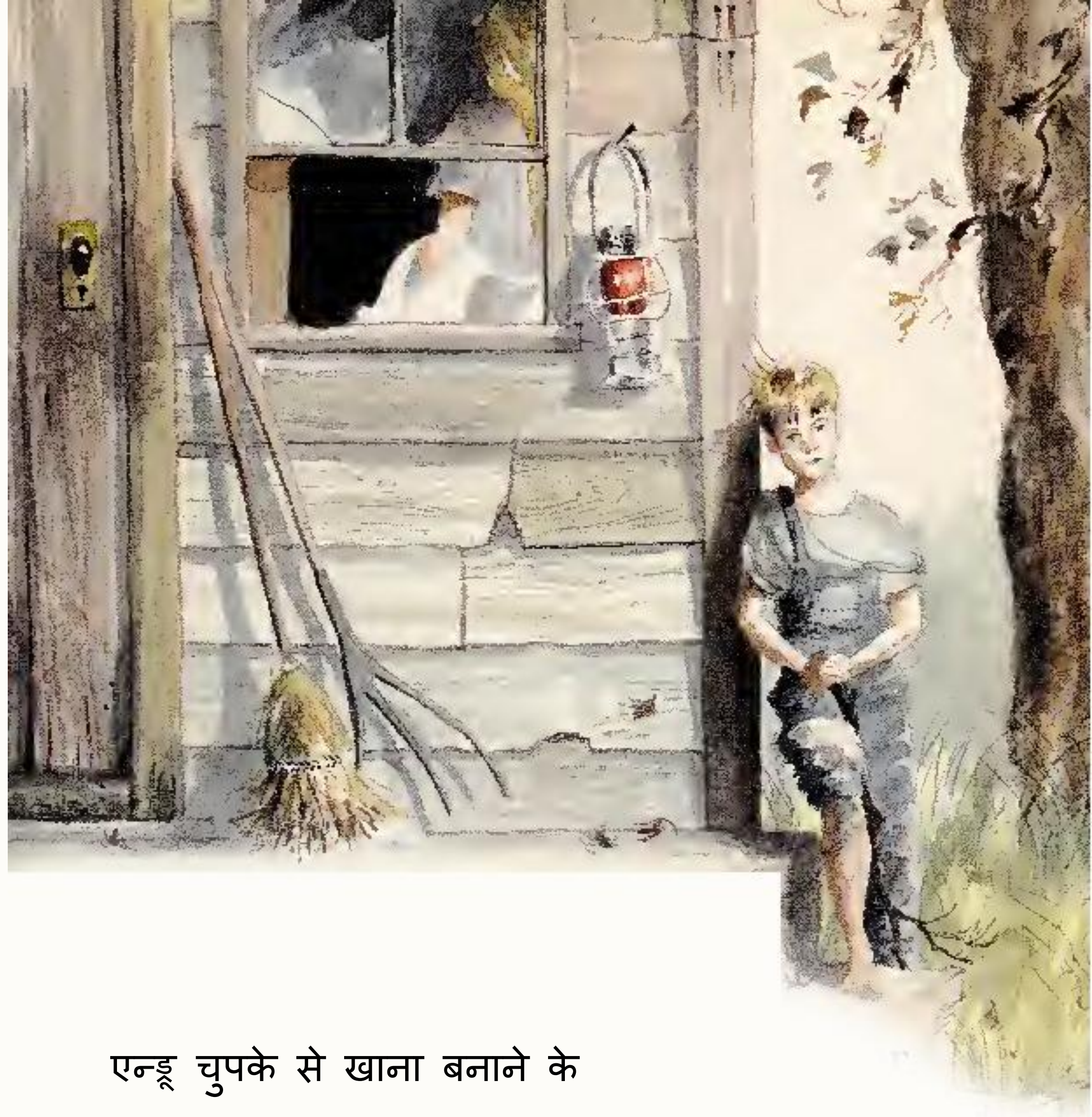
औरतों के जिम्मे अपने घर को साफ़ रखने का कठिन काम भी था। इन कस्बों में सभी घर कोयले के बुरादे से भरे होते थे और वहाँ पानी की कमी भी थी। ज़्यादातर मज़दूरों के घरों में नलके नहीं थे, सो स्त्रियों को कपड़े धोने, सफ़ाई करने और नहाने के लिए पानी ढ़ो कर लाने में घंटों लगाने पड़ते थे। गर्मियों के महीनों में खाना बनाने ओर नहाने के लिए घर के पीछे बने छप्परों का इस्तेमाल किया जाता था।

ब्रेकर में - जो खान के बाहर बनी एक इमारत होती थी - कोयला तोड़ा, धोया, और आकार के हिसाब से छांटा जाता था। 16 वर्ष से कम आयु के लड़के, जिनमें कुछ तो महज 8 या 9 वर्ष के ही होते थे, छंटनी कक्ष में काम करते थे। वे भी कोयलों की छंटनी करते वक्त हानिकारक हवा को अन्दर लेते। ये ‘ब्रेकरबॉयस’ (ब्रेकर में काम करने वाले लड़के) भी 10 से 11 घंटों की पारियों में, सप्ताह में छह दिन खटते थे, महज 45 सेंट की मज़दूरी पर।

कुछ लड़के खदानों में 'डोरबॉयस' की तरह भी काम करते। वे अंधेरे में उन दरवाज़ों के पास अकेले बैठे कोयले और खान मज़दूरों की ठेला गाड़ियों का इन्तज़ार करते जो भूमिगत सुरंगों को जोड़ती थीं। डोरबॉयस उन दरवाज़ों को खोलते ओर बन्द करते थे जो खान में हवा की आवक-जावक को नियंत्रित करते थे। अगर दरवाज़ों को तेज़ी से बन्द नहीं किया जाता, तो खान की मारक गैसों की मात्रा बढ़ने पर विस्फोट हो सकता था। यानी सबकी सुरक्षा इस पर निर्भर करती थी कि डोरबॉयस अपना काम सही तरह से करें।

कोयला खानों के मज़दूरों के परिवार एक समान कठिनाइयों को झेलते थे। पर उनकी नस्ली और धार्मिक पृष्ठभूमियाँ अलग-अलग थीं। सो वे एक-दूसरे की मदद करने के बदले आपस में लड़ते-झगड़ते थे। इसके बावजूद वे आपदा के समय एकजुट भी हो जाते थे - जैसे खान में दुर्घटना होने, या किसी के घर में आग लग जाने पर। तब सभी मदद करते। ऐसे भी कई मौके आते जब वे आपसी मतभेदों को भुला सप्ताहान्त पर बेसबॉल के खेलों का, या गर्मियों की पिकनिकों का मज़ा लेते। कई साल बाद उन्होंने यह सीख लिया कि उनकी काम करने और जीवन जीने की परिस्थितियों को बेहतर बनाने का एकमात्र तरीका था, साथ जुड़ना।

'ब्रेकर में ख़तरा' एक काल्पनिक कहानी है, जो एक खान मज़दूर के बेटे के जीवन के एक खास दिन के बारे में है। जिस दिन उसने ब्रेकर बॉय के रूप में काम करना शुरु किया।



एन्ड्रू चुपके से खाना बनाने के
खस्ताहाल छप्पर की एक ओर आ खड़ा हुआ।
उसने अपना कान उसके गलते हुए दरवाज़े से लगाया।
उसने अपनी माँ और डैडी को बातचीत करते सुना।
''मैंने आज कम्पनी की दुकान में
ज़्यादा बेरियाँ बेचीं,'' माँ ने कहा।
''कुछ और क्वार्ट (25 सेंट के सिक्के) और एन्ड्रू को
स्कूल के कुछ नए कपड़े मिल सकेंगे।''





“एन्ड्रू अब स्कूल
नहीं जाएगा,” उसके पिता ने कहा।
“बॉस ने कहा है कि उसके लिए
ब्रेकर बॉय की तरह काम
करने का मौका है।”
एन्ड्रू की माँ ने धम्म से
केतली को लकड़ी के चूल्हे पर रखा।
“पर एन्ड्रू बहुत छोटा है!” वह चीखी।
“वह सिर्फ आठ बरस का है।”

“मैं जानता हूँ,” एन्ड्रू के पिता बोले।
“तुम सही कह रही हो। वह सचमें बहुत छोटा है।
वह ब्रेकर में सबसे छोटा लड़का होगा।
पर बॉस ने कहा है कि इस वक्त ही एक जगह खाली है।
और फिर हमें पैसों की ज़रूरत भी तो है।
मुझे भी अफ़सोस है। पर मैं एन्ड्रू से कहने वाला हूँ
कि वह कल से ही काम शुरू करेगा।”



बातचीत बन्द हो गई।

फर्श के तख्ते चरमराए।

कोई दरवाज़े से बाहर आ रहा था।

एन्ड्रू एक झाड़ के पीछे कूदा।

दरवाज़ा धड़ से खुला

और उसकी माँ रोते हुए बाहर दौड़ी।

एन्ड्रू ने उसे नंगे पैर

पत्थरों पर लड़खड़ाते देखा।

हमें पैसों की ज़रूरत तो है, उसने सोचा।

पर क्या मुझे ब्रेकर बॉय बनना पसन्द आएगा?

उस रात एन्ड्रू को सोने में दिक्कत हुई।

वह सोचने लगा कि उसके डैड का काम बड़ा ही खराब होगा।

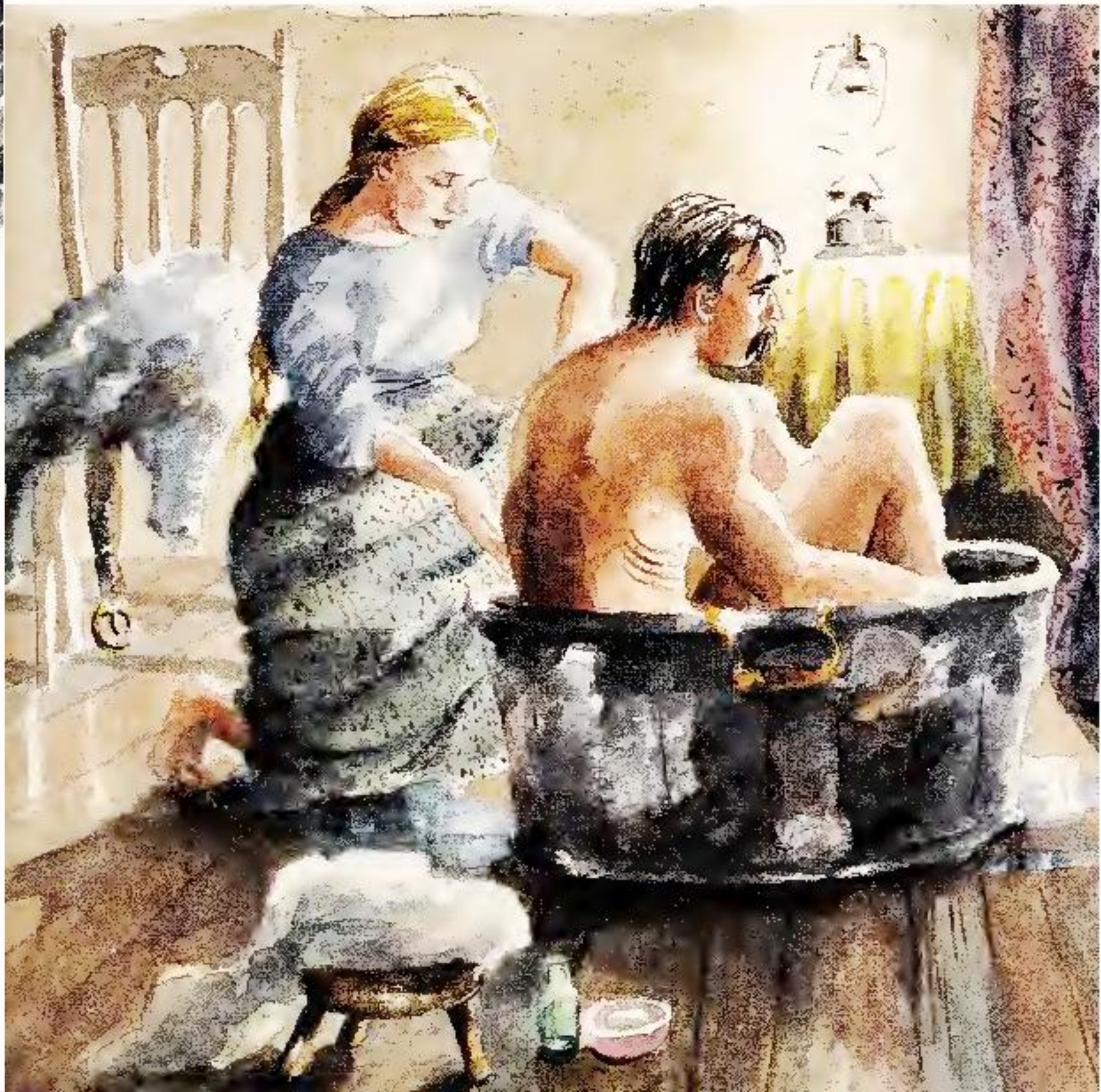
वे हमेशा घरघराहट भरी खाँसी

के साथ घर लौटते थे।

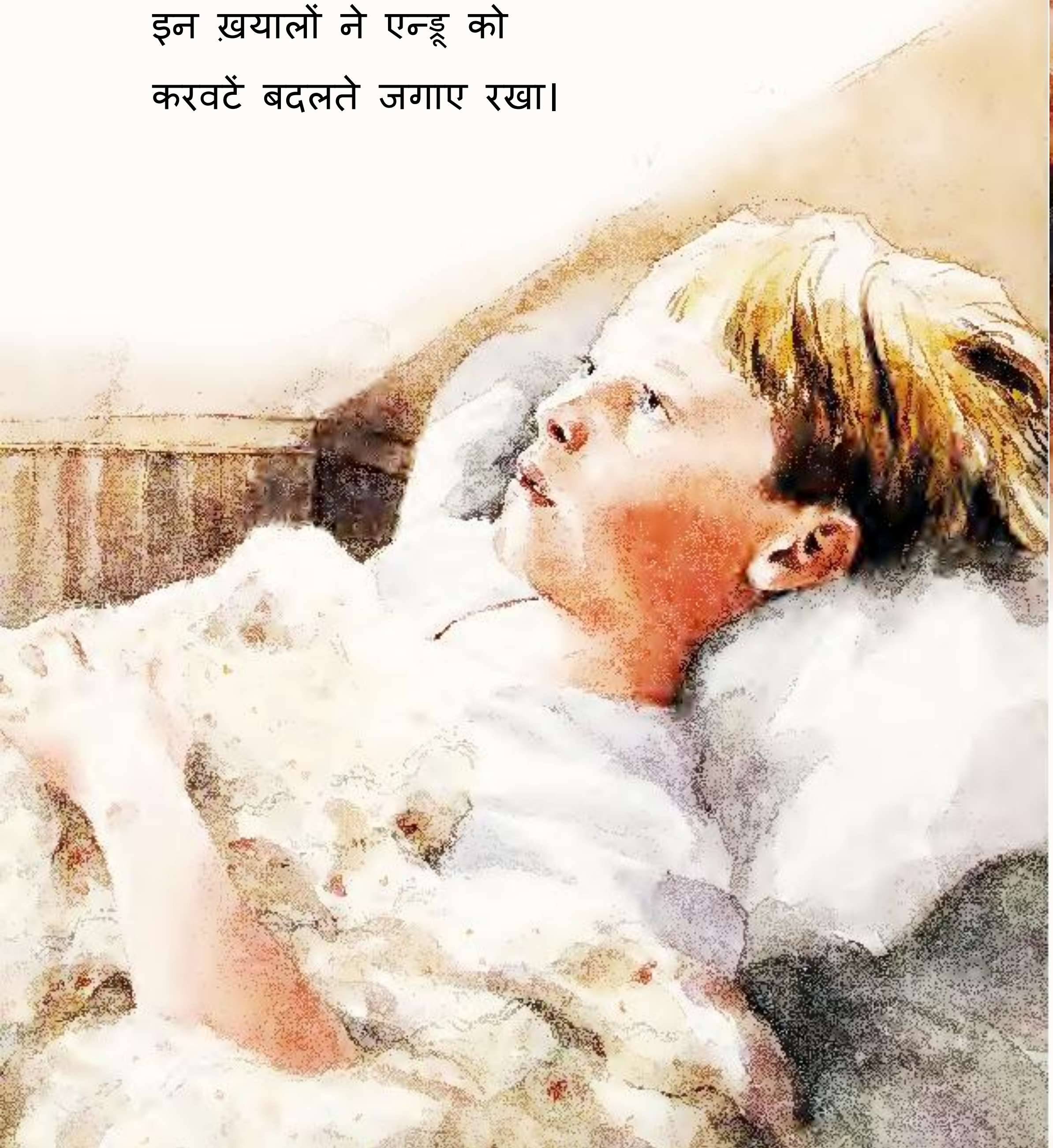
वे कोयले के बुरादे से ढ़के होते थे।

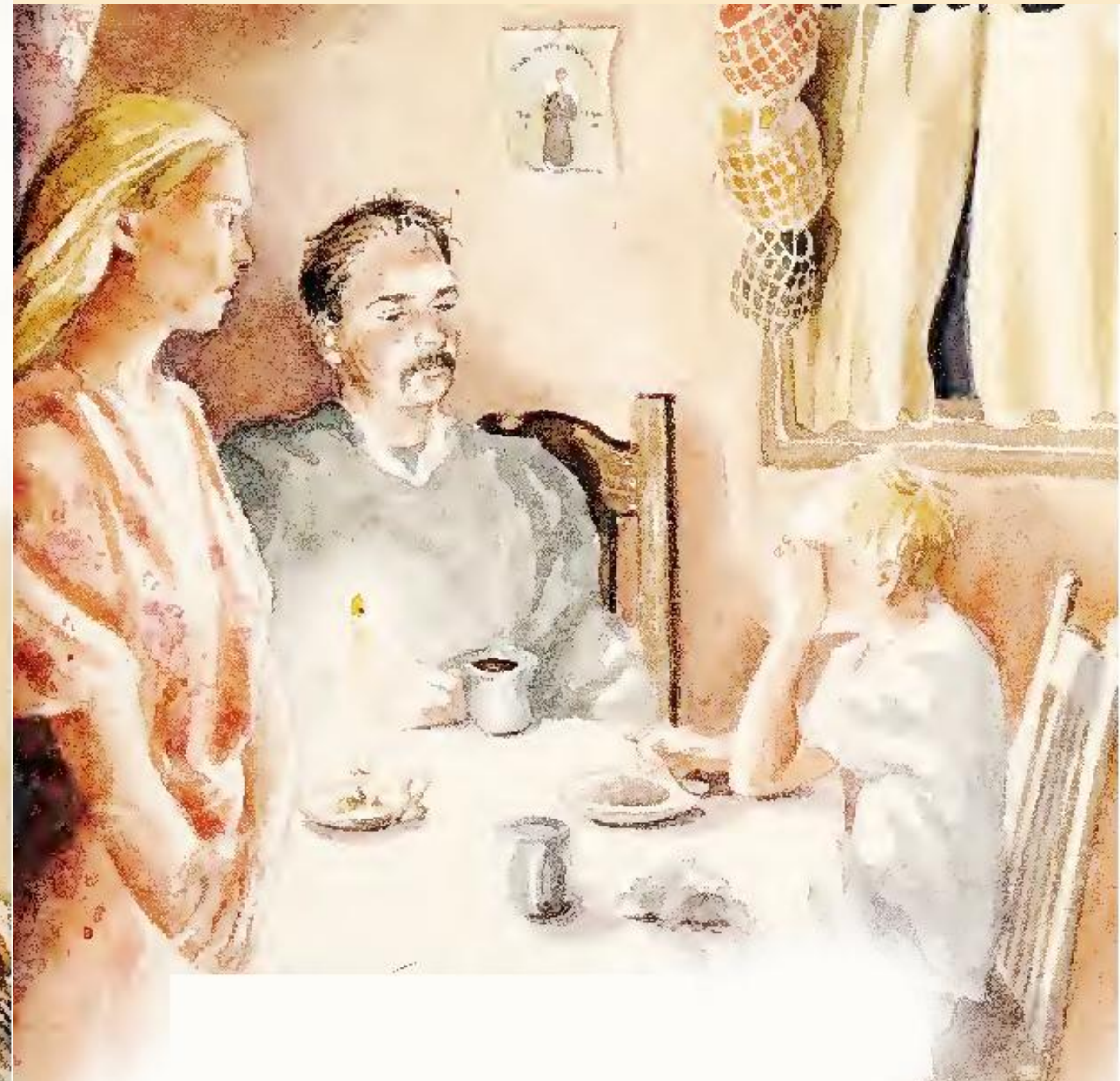
उसकी माँ को उनकी दुखती पीठ को

हर रात रगड़-रगड़ कर साफ करना पड़ता था।



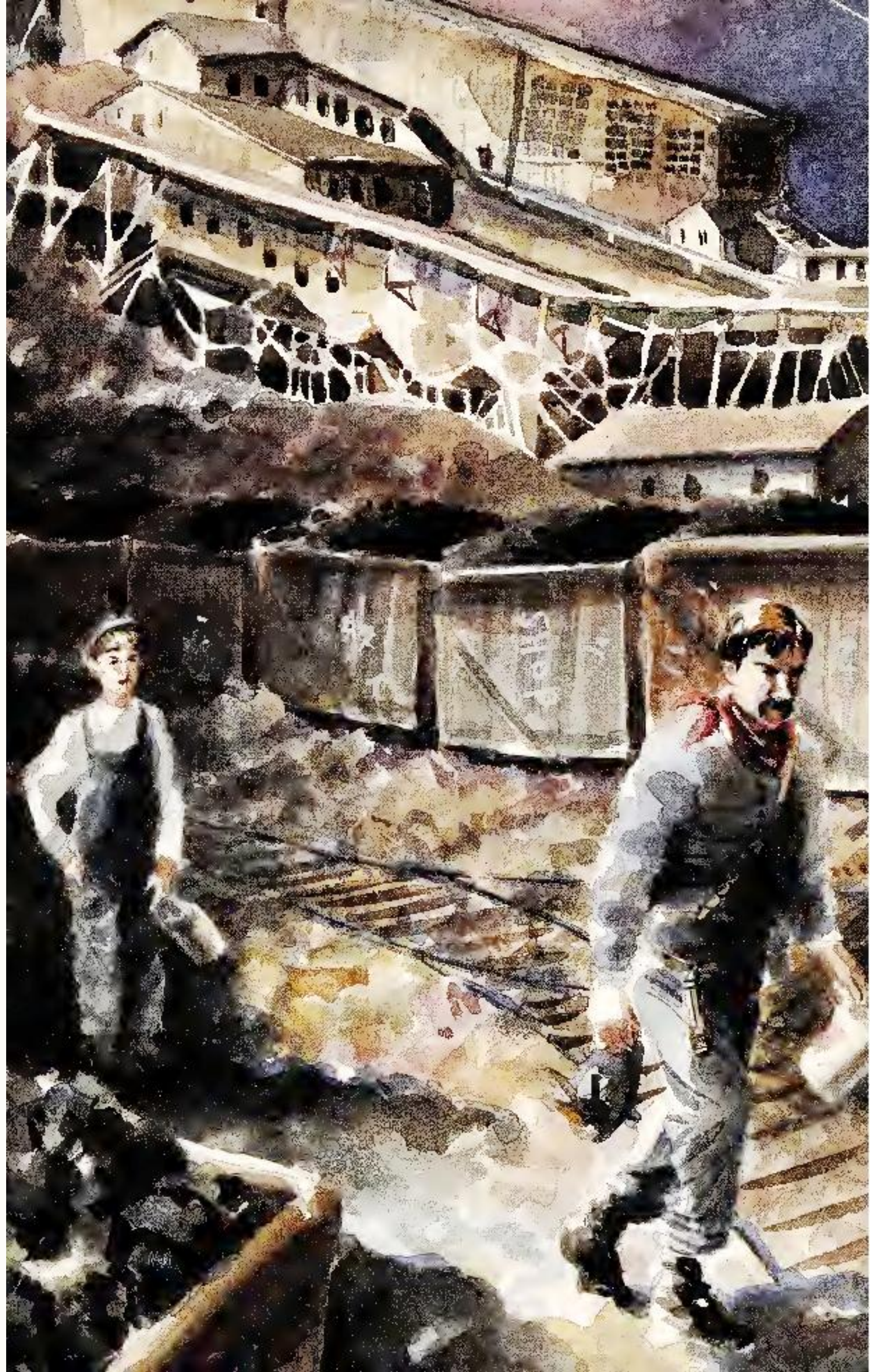
एन्ड्रू ने उस पर सोचा
जो उसके डैड ने कहा था!
“वह ब्रेकर में सबसे छोटा लड़का होगा।”
एन्ड्रू के किसी भी दोस्त ने अब तक
ब्रेकर में काम करना शुरू नहीं किया था।
और वह वहाँ किसीको जानता भी नहीं होगा।
इन ख़यालों ने एन्ड्रू को
करवटें बदलते जगाए रखा।





अगली सुबह बहुत जल्दी आ गई।
तब अंधेरा ही था
जब एन्ड्रू ब्रेकर की
सीटी से जागा।
उसने अपने कपड़े पहने
और थोड़ा-सा दलिया निगला।
जाने का समय हो चुका था।

एन्ड्रू और उसके डैड चुपचाप
कोहरे से ढ़की पगडंडी पर बढ़े।
एन्ड्रू के डैड ने एक टेढ़ी इमारत
की ओर इशारा किया
जो खान के बाहर थी।
"वह ब्रेकर है," वे बोले।
"तुम वहीं काम करोगे।"
एन्ड्रू ने इमारत को देखा।
उसने ब्रेकर में काम करने वाले लड़कों को भी देखा।
वे फुटबॉल खेल रहे थे।
"तुम उस ओर जाओ," उसके डैड ने कहा।
"मैं बाद में तुमसे मिलूंगा।"
एन्ड्रू ने पिता को आगे बढ़ते देखा।
वह उन्हें तब तक देखता रहा
जब तक वे अपनी कुदाल और फावड़े के साथ
ज़मीन के नीचे गायब न हो गए।





तब अचानक - थपाक।

उसे अपनी पीठ पर एक चपत का अहसास हुआ।

“मेरा नाम पैट्रिक है,”

एक भर्राई आवाज़ ने कहा।

“यानी पैट्रिक कैली!”

एन्ड्रू से दुगने आकार के एक लड़के ने कहा।

पैट्रिक के पीछे दर्जन भर लड़के थे।

वे सबके सब एन्ड्रू के गिर्द घिर आए।

एन्ड्रू सकपका कर अपने पैरों की ओर ताकने लगा।

ज़मीन पर कोयले के चूरे की

मोटी चटाई-सी पसरी थी।

पैट्रिक, एन्ड्रू के और पास झुका।

“मैं यहाँ सबसे ज़्यादा समय से हूँ,”

उसने एन्ड्रू को बताया।

“मैं खानों के बारे में सब कुछ जानता हूँ।”

एन्ड्रू ने पैट्रिक के हाथों को देखा।

उसके हाथों पर चोटों और खरोंचों के निशान थे।

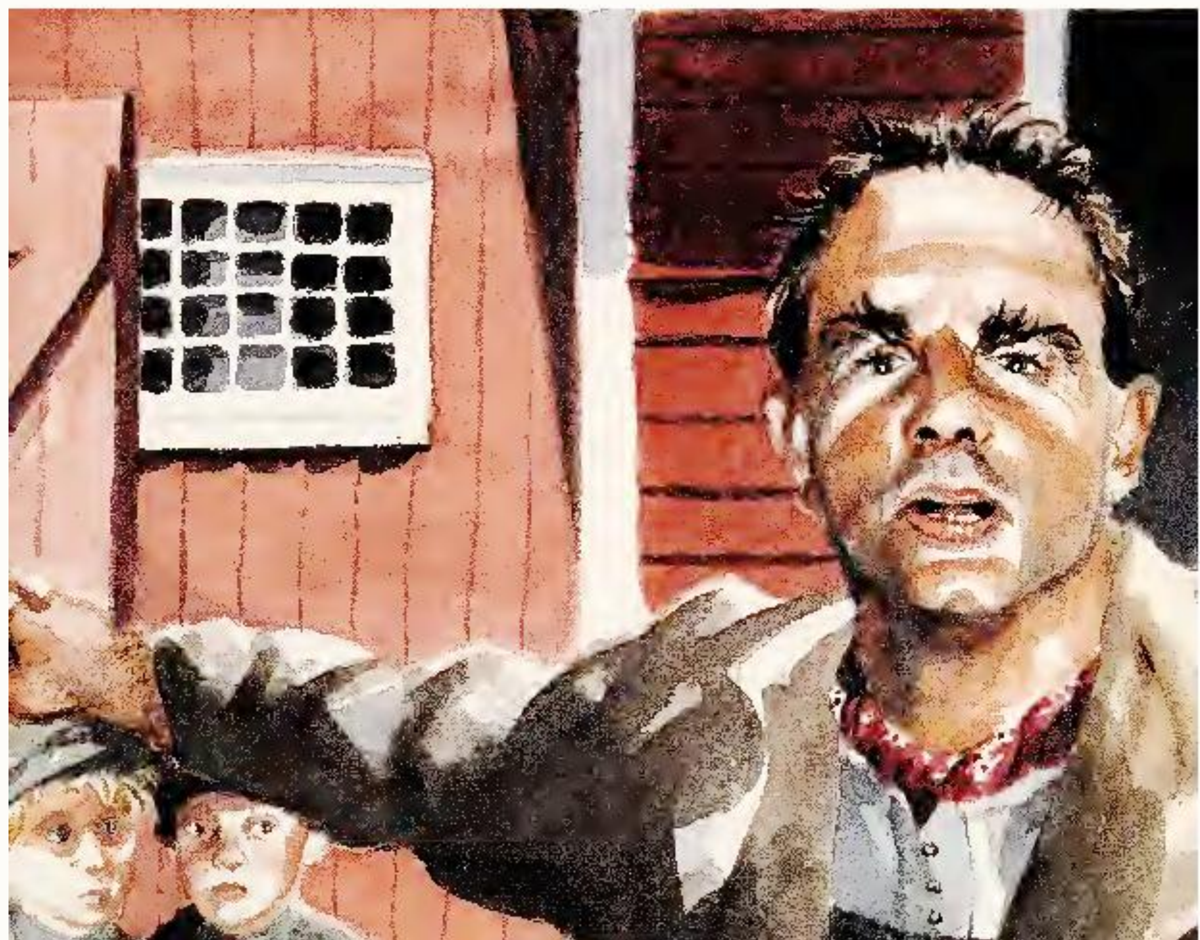
पैट्रिक सीधे एन्ड्रू की
आँखों को ताक रहा था।
"तुम्हें पता है कि अगर
तुमने सुस्ती से काम किया
तो वे तुम्हें खानों की सुरंगों में भेज देंगे।"
एन्ड्रू यह सुन छटपटाया, और
उसने अपने पैर कोयले के चूरे में धंसा लिए।
"क्या तुम कभी नीचे सुरंगों में गए हो?"
पैट्रिक ने एन्ड्रू को फुटबॉल से कोंचते पूछा।
एन्ड्रू ने ना में सिर हिलाया।
"तुम्हें वहाँ कतई अच्छा नहीं लगेगा।
वे तुम्हें हज़ारों फीट नीचे ले जाते हैं।
वहाँ रात-सा घना अंधेरा होता है,
और मौत-सी खामोशी!
केवल टूटती चट्टानों, टपकते पानी में
दौड़ते चूहों की ही
आवाज़े सुनाई देती हैं।"





बकबक फौरन बन्द हो गई।
एक नाराज़ दिखने वाला आदमी
उनकी ओर बढ़ आया।
"पैट्रिक कैली," वह भौंका।
"आज तुम डोरबॉय हो।
खान की ओर जाओ!"
पैट्रिक का चेहरा ज़र्द पड़ गया।
वह डगमग पैरों से चल पड़ा
मानो उसने सीसे के जूते पहन रखे हों।

"और अगर चूहे तुम पर न झपटें
तो सुरंग ढ़ह सकती है,"
एक दूसरे लड़के ने जोड़ा।
"विस्फोट भी हो सकता है।
गैसें तुम्हारा काम तमाम कर सकती हैं।
खान की सुरंग में बाढ़ आ सकती है
और तुम डूब सकते हो।"
ठीक उसी वक्त पैट्रिक ने उस लड़के को कोहनी मारी।
"चुप करो। बॉस आ रहा है।"



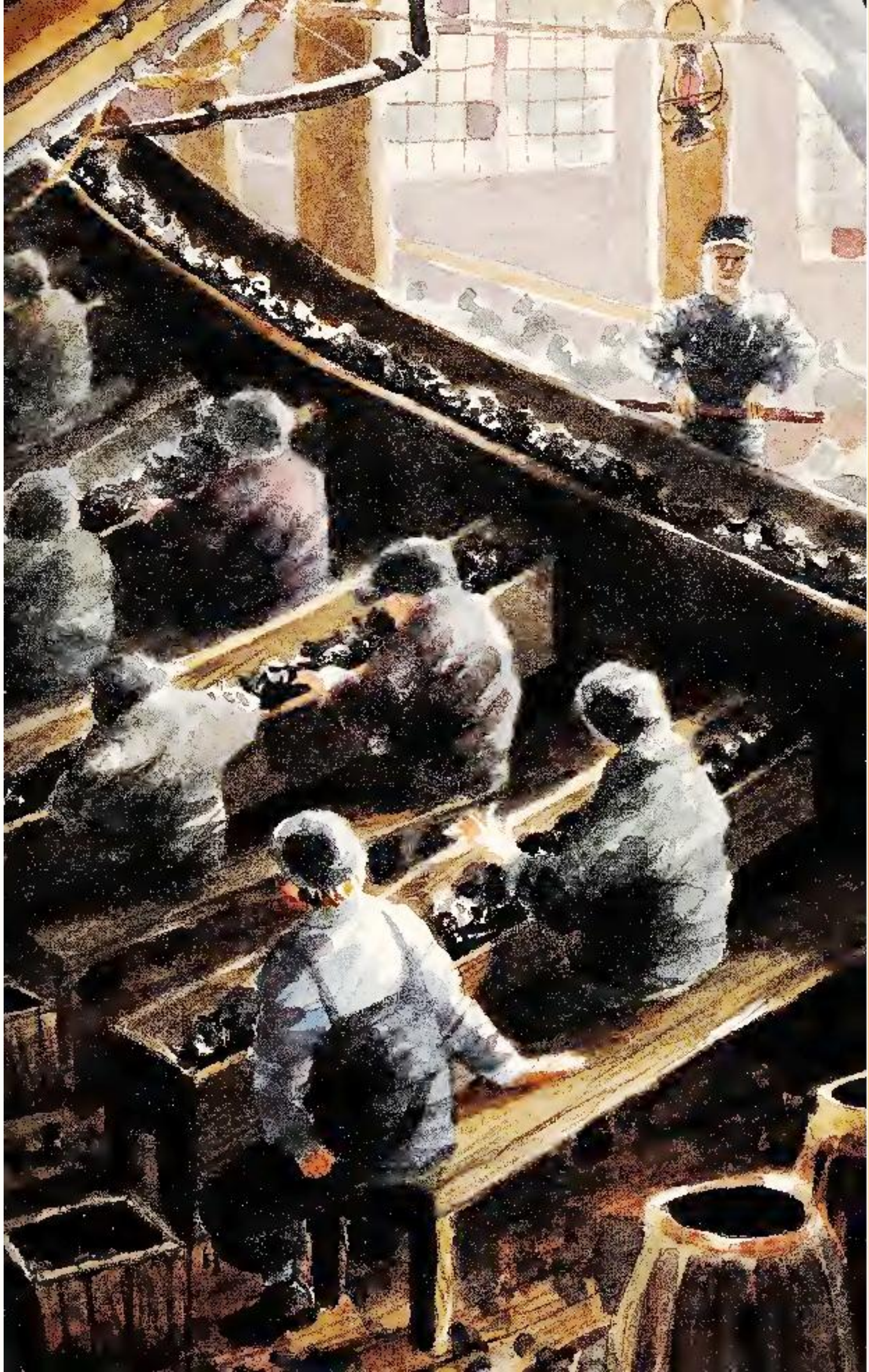


''बाकी सब मेरे पीछे आओ,''
बॉस चीख कर बोला।
एन्ड्रू भी बाकी लड़कों के पीछे चल पड़ा।
ब्रेकर में घुसने के पहले
बॉस एन्ड्रू की ओर मुड़ा।
''तुम एन्ड्रू पुलास्की हो?''
''ज-ज-जी जनाब,'' एन्ड्रू ने हकलाते हुए जवाब दिया।

''तुम ब्रायन के बगल में बैठ काम करोगे,'' बॉस ने कहा।
बॉस ने एक लड़के की बाँह झपट कर पकड़ी।
''यह तुम्हें बताएगा कि छंटनी कैसे करते हैं।''
एन्ड्रू ने ब्रायन को देखा।
ब्रायन, एन्ड्रू से लम्बा था,
पर उम्र में उससे बहुत बड़ा नहीं।
एन्ड्रू को वह दोस्ताना लगा।
ब्रायन, एन्ड्रू को देख मुस्कुराया
और कोहनी मार उसे इमारत में ले गया।



अन्दर मशीनों के शोरगुल से
ब्रेकर गरज और थर्रा रहा था।
वह कमरा एक गुफा-सा था।
वहाँ सब कुछ कोयले के चूरे के कारण कलौंसा था।
ब्रायन एन्ड्रू को एक संकरे रास्ते से
एक सचल ढलवाँ पट्टी के पास रखी बैंच पर ले गया।
''यहाँ बैठो और मुझे देखो,''
उसने मशीनों के शोर के चलते चीख कर कहा।
उसी वक्त कमरे के ऊपर
तूफान-सी गड़गड़ाहट हुई।
एन्ड्रू ने ऊपर देखा।
सचल पट्टी पर बढ़ता हुआ
कोयले का ढ़ेर नीचे आया।
एन्ड्रू ने देखा कि रोलर
कोयले के बड़े ढ़ेलों को फोड़
सचल पट्टी पर आगे फेंक रहा है।
वे टुकड़े तब पानी में धोए गए
और धातु की चादर में बने छेदों से गिरे।







आख़िरकार कोयला
सचल पट्‌टी पर लुढ़कता
लड़कों के पास आने लगा।
ब्रायन पट्‌टी पर झुका
और फुर्ती से कुछ
टुकड़े छांट कर निकाले।
''कोयले के जो चमकदार टुकड़े हैं उन्हें जाने दो,''
उसने एन्ड्रू से कहा।
''रद्‌दी और फीके नज़र आने वाले को छांट निकालो।
उन्हें अपने पास रखे डब्बे में फेंक दो।''

एन्ड्रू ने हाँ में सिर हिलाया और ब्रायन की नकल की।
कोयला खड़खड़ाता पट्‌टी से नीचे आ रहा था।
एन्ड्रू ने अपने हाथ आगे बढ़ाए।
उसने बेकार टुकड़े तलाशे।
इतने में और कोयला आया
जिसने उसके हाथों को छीला।
एन्ड्रू ने तेज़ी से बेकार टुकड़े चुने।
उन्हें डब्बे में डाला
तब अपने हाथों को देखने रुका।
उसकी उंगलियों के जोड़ों से खून निकल रहा था।

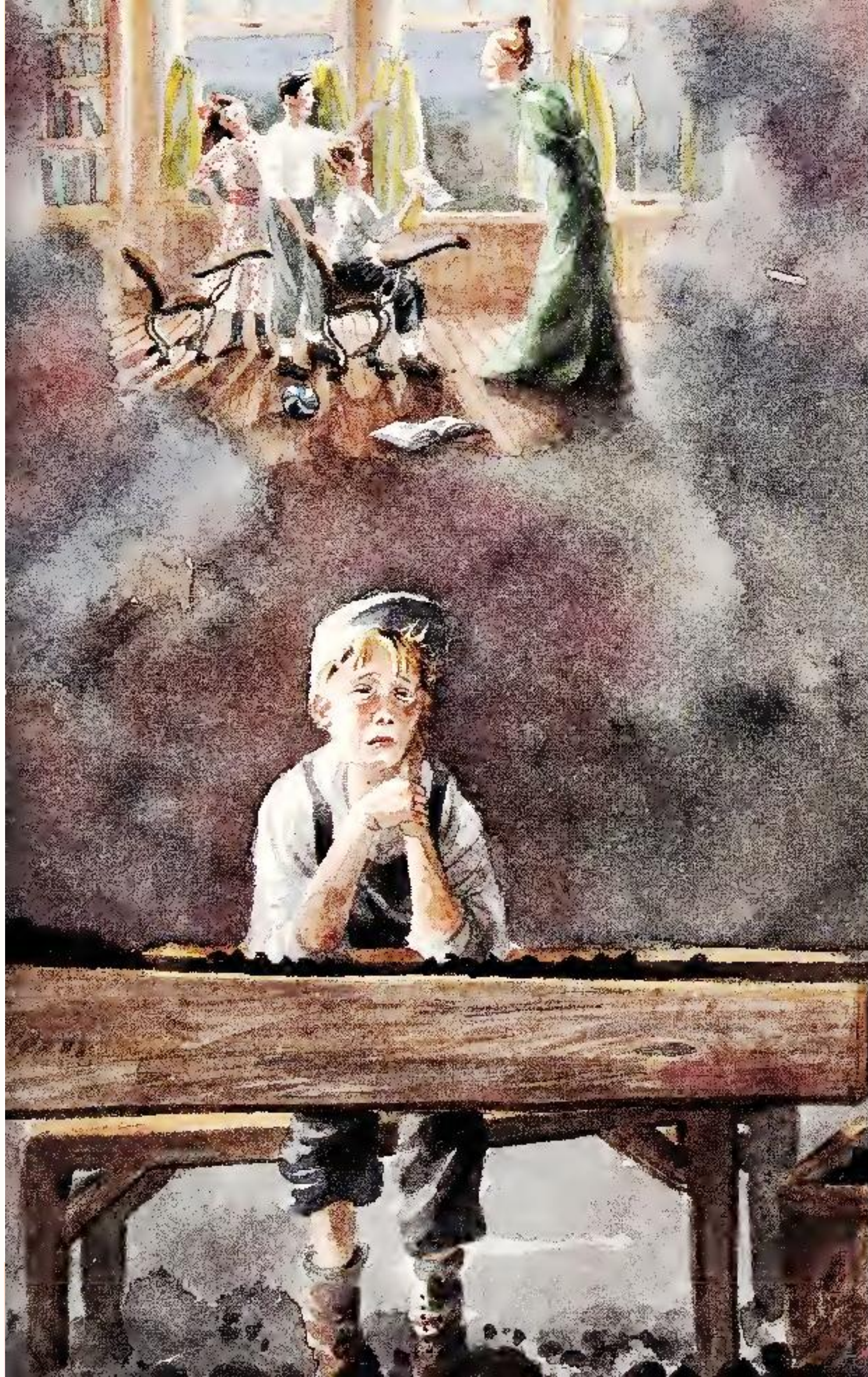




“काम करते रहो,” ब्रायन ने ऊँची आवाज़ में कहा।
“बॉस देख रहा है!”
एन्ड्रू ने आँखें ऊपर उठा कर देखा।
छंटनी करने वालों का बॉस
पहरेदारी कर रहे कुत्ते की तरह नीचे झांक रहा था।
एन्ड्रू ने घबरा कर अपना हाथ पट्टी के ओर बढ़ाया।
उसकी उंगलियाँ रफ्तार बनाए रखने की कोशिश कर रही थीं।
“काम से नज़र कभी न उठाना,” ब्रायन ने चेताया।
“ऐसा किया तो तुम अपनी उंगली खो भी सकते हो।”

उंगली खो देना!
इस ख़याल ने सिरहन पैदा की।
वह लगातार आगे बढ़े आ रहे कोयले के टुकड़ों
में से बेकार टुकड़े छांटने लगा।
उसने ऊपर देखने या काम रोकने की हिम्मत नहीं की।
वह अपनी ऊंगली नहीं खोना चाह रहा था।
न ही वह सुस्ती से काम करने के कारण
सुरंगों में भेजा जाना चाहता था।

सुबह अंतहीन लगने लगी।
कोयले की खड़खड़ाहट और मशीनों के
चिंचिंयाने ने उसके समूचे शरीर को हिला कर रख दिया।
कोयले के सलेटी बुरादे का बादल
उसकी आँखों में जलन पैदा कर रहा था।
उसकी नाक बन्द हो गई।
उंगलियाँ जकड़ गईं।
लगातार झुकने से पीठ दुखने लगी।
काश मैं वापस स्कूल में होता,
एन्ड्रू ने सोचा,
अपने दोस्तों के साथ।
हर दिन यहाँ आना मुझे कभी पसन्द नहीं आएगा।







घंटों बाद सीटी बजी।
दोपहर के बारह बजे थे।
खाने की छुट्टी का समय हो चुका था।
एन्ड्रू के पास खाने के नाम पर डबलरोटी का टुकडा था
जिस पर जैम (मुरब्बा) लगा था।
वह काफी नहीं था।
पर लम्बी सुबह के बाद
वह स्वादिष्ट लगने वाला था।
अपना कटोरदान पकड़े
अपनी जगह छोड़ते हुए
एन्ड्रू और ब्रायन बतियाने लगे।

''पैट्रिक जो कहे उस सब पर
भरोसा मत करना,'' ब्रायन ने सलाह दी।
''धीमे काम करने से वे
खानों में नहीं भेजते।
पर छंटनी बॉस का ध्यान रखना।
वह इस बात पर सख़्त नज़र रखता है कि
तुम सारे बेकार टुकड़े छांट रहे हो या नहीं।
अगर तुम सही काम न करो
तो वह तुम्हें लात जमा सकता है,
या छड़ी से सूंत सकता है। कभी तो गुस्साने पर
वह हथौड़ी से तुम्हारा घुटना तक फोड़ सकता है।''

अचानक

धमाक! धमाक! धमाक!

विस्फोट ने पूरे इलाके को हिला दिया।

ऊँउउउउ! ऊँउउउउ!

ब्रेकर की सीटी चीखी।

सब इमारत से बाहर भागे।

पर एन्ड्रू हिला तक नहीं।

उसे पता ही नहीं था कि उसे करना क्या है।

ब्रायन ने उसकी बाज़ू झपट कर थामी।

''चलो भी,'' वह चिल्लया।

बाहर लोग इधर-उधर भाग-दौड़ कर रहे थे।

कुछ कामगार स्ट्रैचर उठाए

दुर्घटनास्थल की ओर दौड़े।

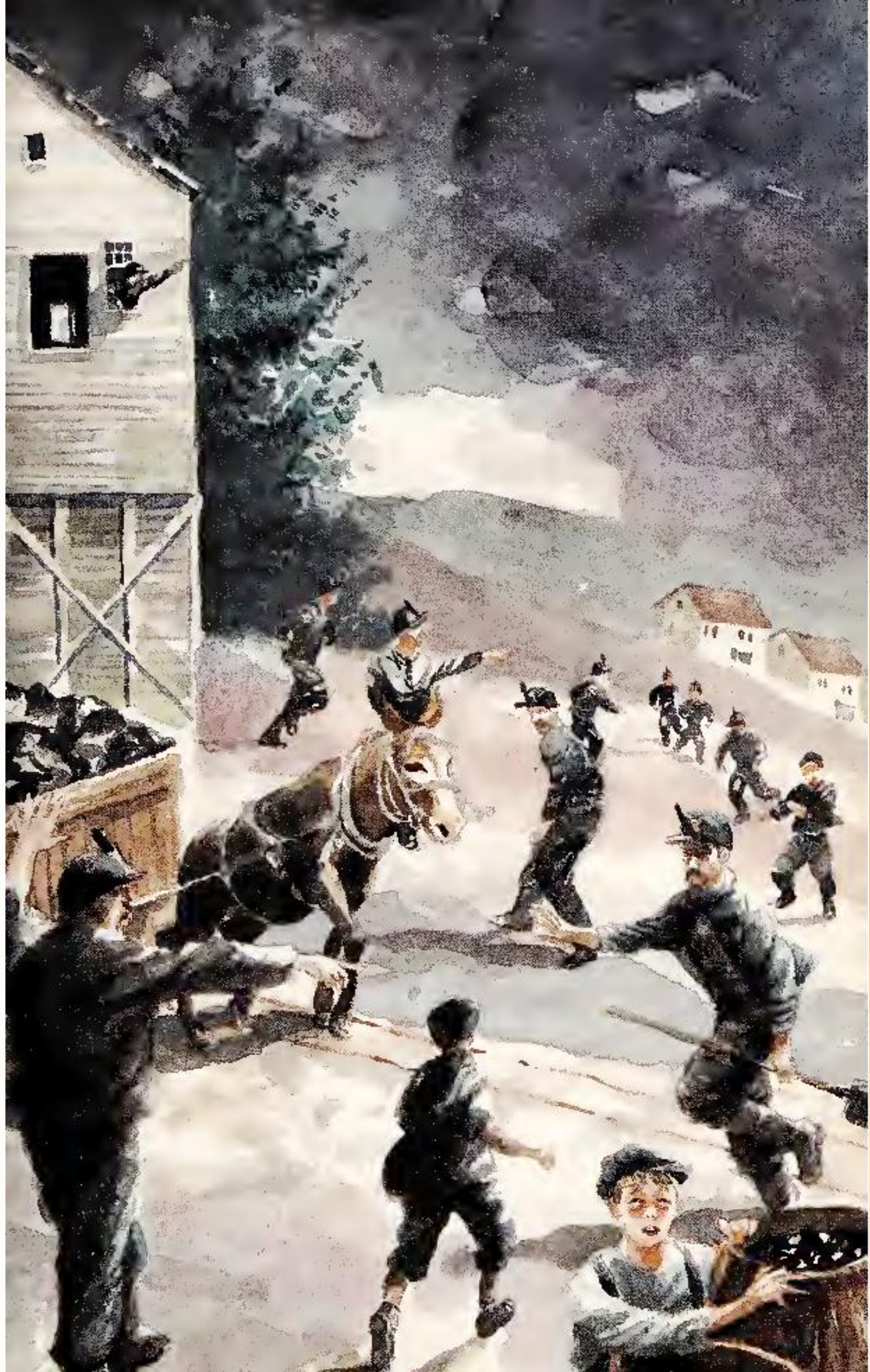
कुछ मज़दूर खान से लड़खड़ाते बाहर निकले।

खांसते और लम्बी-गहरी साँसें खींचते।

एक घोड़ा कोयले का छकड़ा घसीट रहा था।

वह आदमियों के पीछे लंगड़ाता बढ़ रहा था।

और तब वह अचानक धरती पर गिर पड़ा।







घबराए ब्रेकर बॉयस् एक-दूसरे के पास सिमट आए।
वे सब कुछ देख रहे थे, इन्तज़ार कर रहे थे।
खान से कुछ और लोग
लड़खड़ाते हुए बाहर निकले।
उनमें पैट्रिक भी था।
वह धूल-मिट्टी से सना था।
"आख़िर हुआ क्या?"
सीटी के शोर के बीच
ब्रायन ने चीख कर पूछा।

"मैंने कोयले से भरे छकड़ों को
निकालने के लिए दरवाज़ा खोला,"
पैट्रिक ने बताया।
"तब अचानक एक धमाका हुआ।"
पैट्रिक हाँफते हुए बोला।
वह लड़खड़या और धरती पर जा गिरा।
"मैं कभी वहाँ वापस नहीं जाऊंगा।"
दो लड़कों ने पैट्रिक की मदद की।
एन्ड्रू और ब्रायन चुपके से खान के पास बढ़े।



एन्ड्रू ने अपने डैड को तलाशा।
उसे वे कहीं नहीं दिखे।
अगर डैड अन्दर फंस गए हों तो? एन्ड्रू ने सोचा।
वे खान के ढ़हने से कुचले जा सकते हैं।
वे डूब सकते हैं,
या गैसों से मारे जा सकते हैं।
उसका सिर चकराने लगा
और घुटने कांपने लगे।
वह फिसला और धरती पर जा बैठा।

अब तक खान मज़दूरों की बीवियाँ भी
दौड़ती हुई आने लगी थीं।
कुछ अपने शिशुओं को गोद में लिए थीं,
तो कुछ बच्चों का हाथ थामे उन्हें घसीटती आ रही थीं।
एन्ड्रू की माँ भी उनमें शामिल थी।
एन्ड्रू का दिल और तेज़ी से धड़कने लगा।
उसने किसी तरह खुद को खड़ा किया
और माँ की ओर दौड़ा।
"डैड अब भी वहीं नीचे हैं," वह रोते हुए बोला।





उसी समय ब्रायन ने एक खान मज़दूर को
स्ट्रैचर पर ले जाए जाते देखा।
ब्रायन उनकी ओर दौड़ा,
एन्ड्र और उसकी माँ भी उसके पीछे गए।
स्ट्रैचर पर ब्रायन के पिता थे।
उनका चेहरा कटा था और कपड़े फटे हुए।
''मेरे पति,'' एन्ड्रू की माँ ने रोते हुए पूछा,
''पुलास्की, क्या आपने उसे देखा था?''

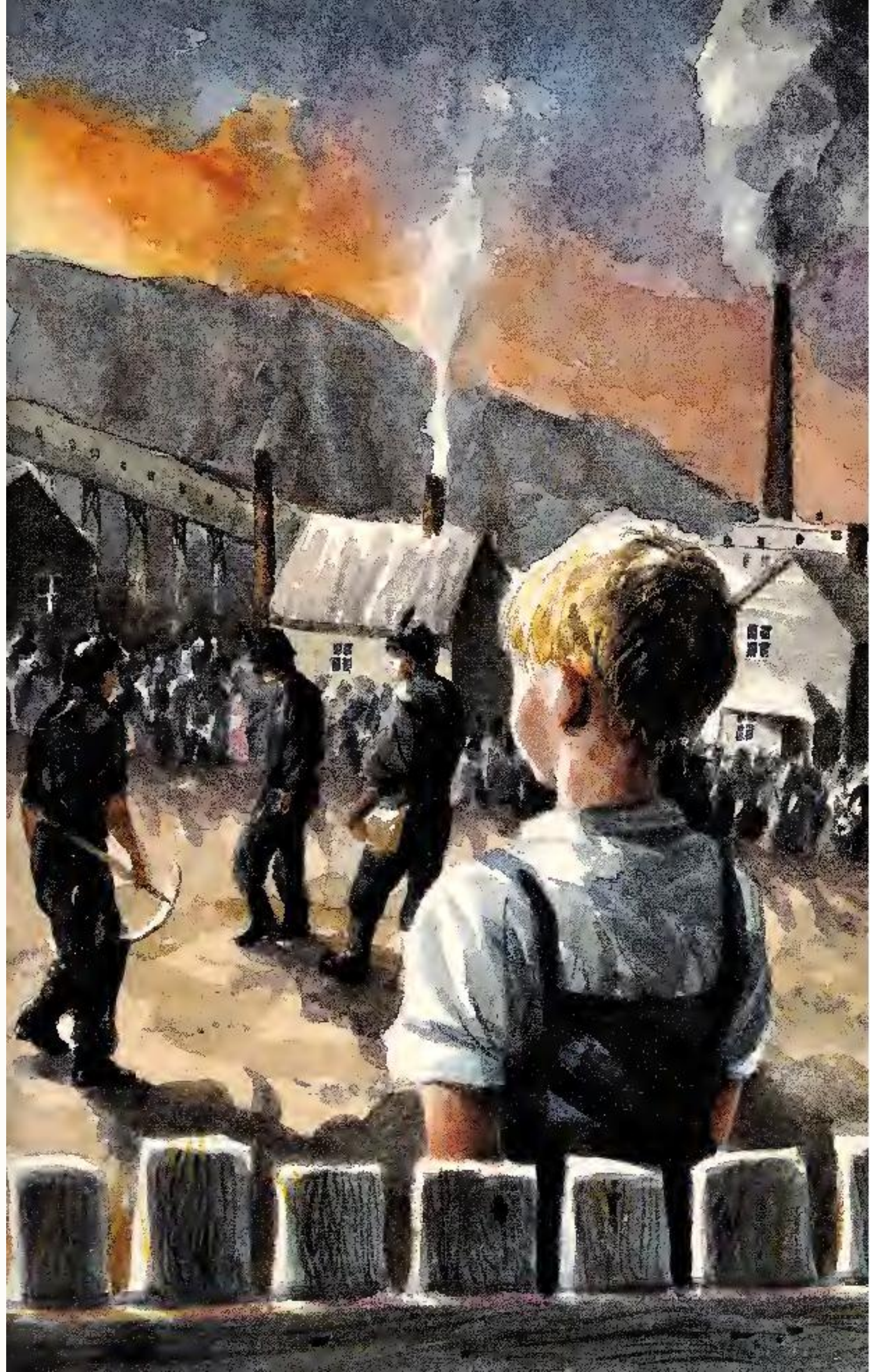


ब्रायन के पिता ने ना में सिर हिलाया।
''वह मुझसे नीचे वाली सुरंग में था।
धमाके के बाद लकडी टूटी
और छत का एक हिस्सा ढ़ह गया।
वह बाहर निकला ही नहीं।''

एन्ड्रू और उसकी माँ इन्तज़ार करते रहे।
नीचे गहरी सुरंगों में कामगार फावडों और कुदालों से
फंसे हुए खान मज़दूरों को
निकालने की कोशिश कर रहे थे।
समय उनके विरुद्ध था।
कुछ ही समय में हवा खत्म हो जाने वाली थी।
पर लापरवाही और हड़बड़ी से
किसी दूसरी सुरंग के ढ़हने की संभावना थी।
घंटों गुज़रे।
अंधेरा हो चला।
सीटी खामोश थी।
खान से कोई नहीं निकला।
खान के बार की गहमा-गहमी
अब बन्द हो चुकी थी।
एन्ड्रू ने उस पर सोचा
जो पैट्रिक ने पहले कहा था,
''मौत-सी खामोशी!''

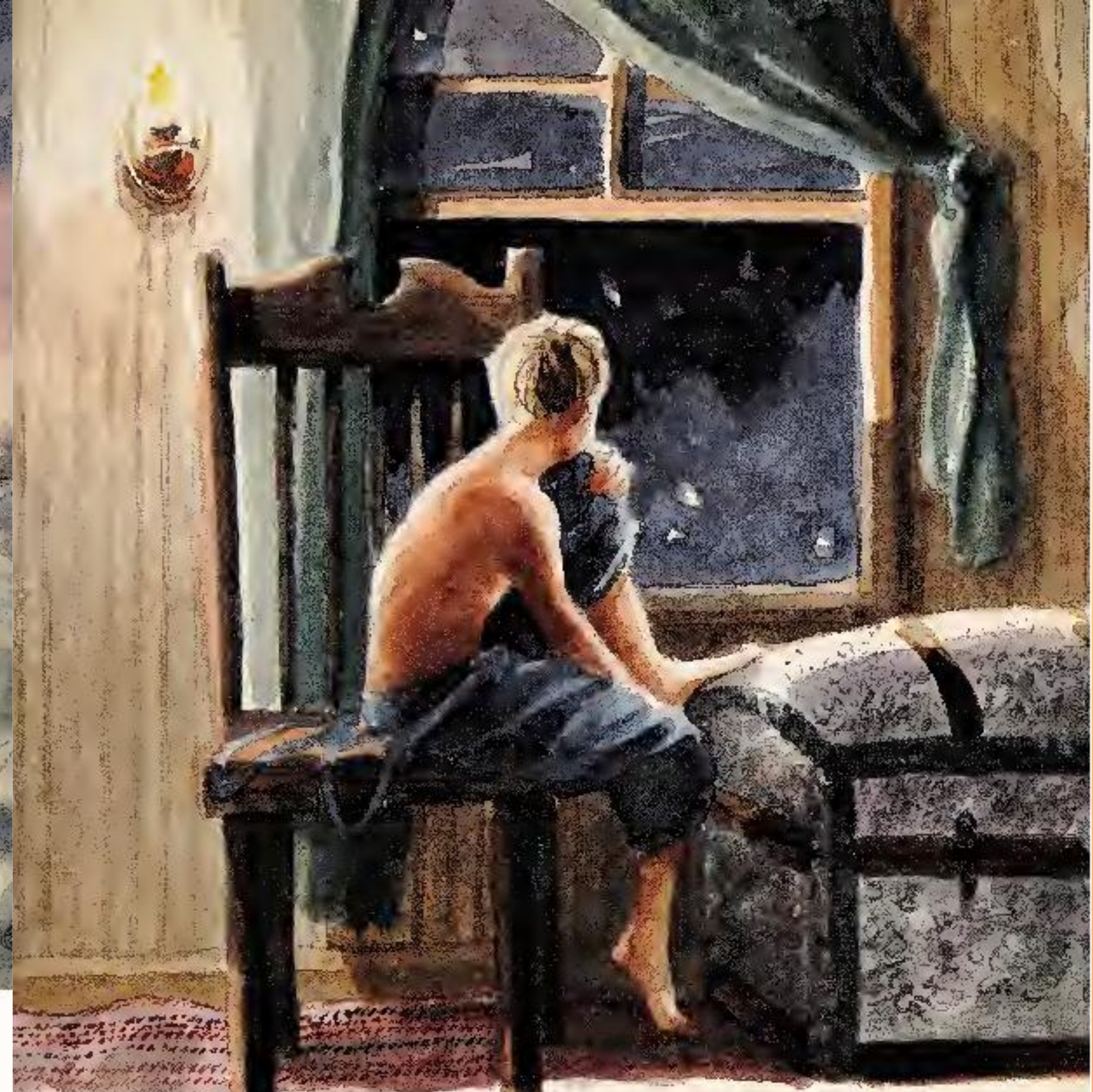


आख़िरकार कुछ खान मज़दूर
लंगड़ाते हुए खान से बाहर आए।
एन्ड्रू चौकन्ना खड़ा हो गया।
उसने पहले एक इन्सान को देखा।
वह उसका पिता नहीं था।
तब दूसरे को।
वह भी उसका डैड नहीं था।
तीन और लोग निकले।
उनमें कोई उसका पिता नहीं था
एन्ड्रू ने एक कोमल स्पर्श महसूस किया।
"घर लौटने का समय हो गया है बेटा,"
उसकी माँ ने कहा।





आहिस्ता-आहस्ता एन्ड्रू
और उसकी माँ घर लौट चले।
वे ख़ामोश थे।
एन्ड्रू की माँ छप्पर में गई
एन्ड्रे के नहाने की तैयारी करने।

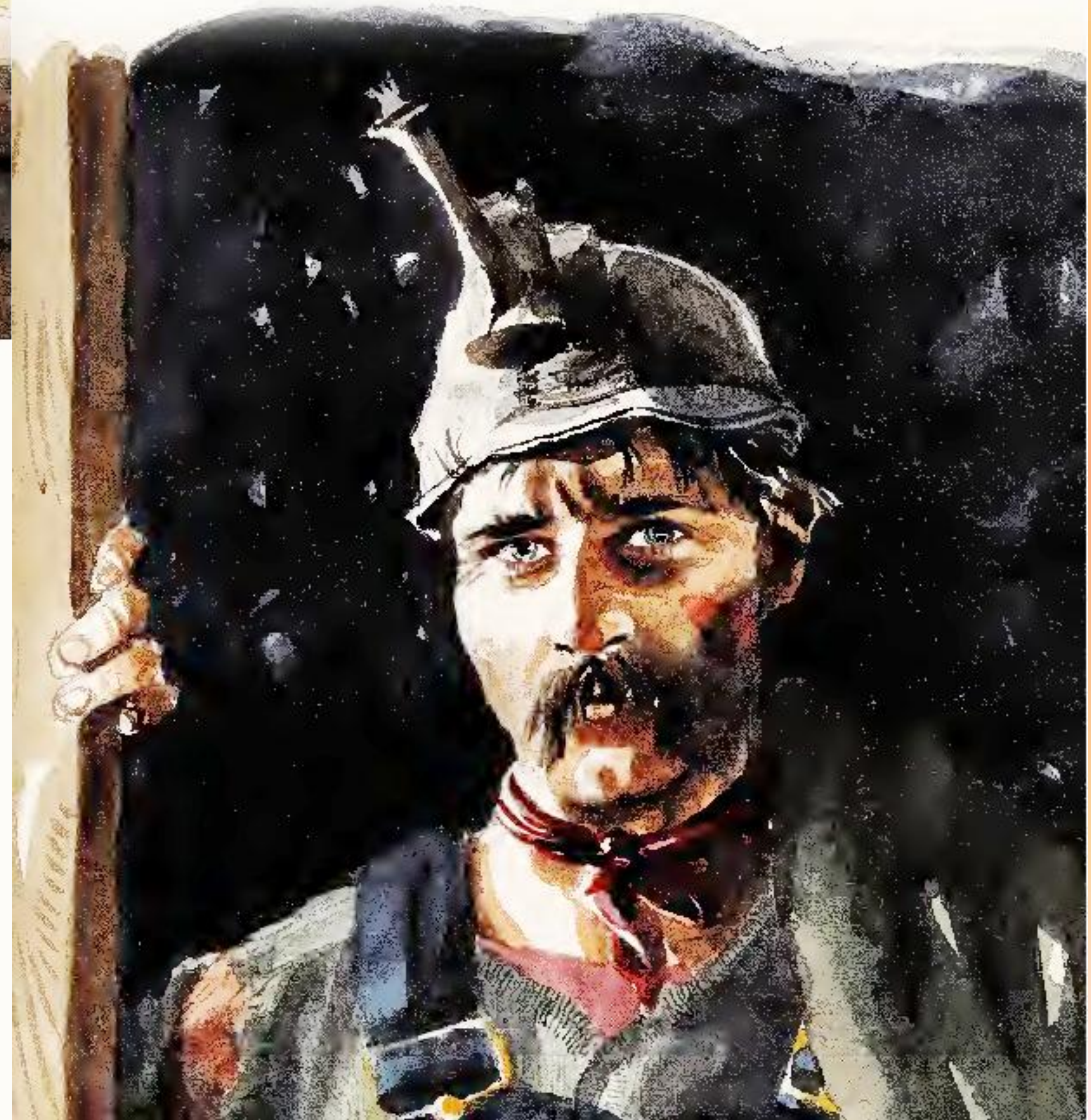


एन्ड्रू सामने वाली खिड़की के पास जा बैठा।
अंधेरा इतना घना था
कि बाहर खास दिखाई नहीं दे रहा था।
पर एन्ड्रू लगातार आगे घूरता और उम्मीद करता रहा।
कुछ देर बाद माँ ने आवाज़ लगाई,
''नहाने का पानी तैयार है।''



एन्ड्रू खिड़की के पास से हटने ही वाला था।
पर रुको, उसने सोचा।
एन्ड्रू ने अंधेरे में तलाशा।
वहाँ कुछ था।
उसे दूर एक धुंधली रोशनी दिखी।
पगडंडी पर एक आदमी बढ़ा चला आ रहा था।

उस आदमी ने खान मज़दूर की टोपी पहन रखी थी।
क्या वह उसका डैड हो सकता है?, एन्ड्रू ने सोचा।
रोशनी कुछ तेज़ हुई।
‘‘डैड आ रहे हैं! एन्ड्रू चीखा।
‘‘डैड आ रहे हैं!



अगले दिन
एन्ड्रू खानों में लौटा,
अपने पिता के साथ।
और अगले कई सालों तक
एन्ड्रू ब्रेकरबॉय की तरह काम करता रहा।
पर पहले दिन जो घटा था
उसे वह कभी न भूल पाया।
वह शायद शोरगुल का, धूल-मिट्टी का
या ख़तरे का कभी आदी न हो सकेगा।
पर उसका काम कुछ ऐसा था जो उसे करना ही था।
क्योंकि कई साल पहले यह कुछ ऐसा था
जो एक खान मज़दूर के बेटे की ज़िंदगी ही थी।

